भगवान् शंकर के स्वरूपों का ध्यान

भगवान् शंकर के अनेक रूप हैं। उन रूपों के अनुरूप उनके ध्यानसंबंधी मन्त्र या श्लोक भी भिन्न-भिन्न मिलते हैं। यहाँ पर शिव के कुछ रूपों के ध्यानसंबंधी श्लोक, जो ग्रन्थों में मिलते हैं, दिये जा रहे हैं। पाठक इन श्लोकों का प्रयोग अपनी उपासना में प्रसंगानुसार कर सकते हैं।

भगवान् सदाशिव

यो धत्ते भुवनानि सप्त गुणवान् स्रष्टा रजःसंश्रयः
संहर्ता तमसान्वितो गुणवतीं मायामतीत्य स्थितः।
सत्यानन्दमनन्तबोधममलं ब्रह्मादिसंज्ञास्पदं
नित्यं सत्त्वसमन्वयादधिगतं पूर्णं शिवं धीमहि।।

जो रजोगुण का आश्रय लेकर संसार की सृष्टि करते हैं, सत्त्वगुण से सम्पन्न हो सातों भुवनों का धारण-पोषण करते हैं, तमोगुण से युक्त हो सबका संहार करते हैं तथा त्रिगुणमयी माया को लाँघकर अपने शुद्ध स्वरूप में स्थित रहते हैं, उन सत्यानन्दस्वरूप, अनन्त बोधमय, निर्मल एवं पूर्णब्रह्म शिव का हम ध्यान करते हैं। वे ही सृष्टिकाल में ब्रह्मा, पालन के समय विष्णु और संहारकाल में रुद्र नाम धारण करते हैं तथा सदैव सात्त्विकभाव को अपनाने से ही प्राप्त होते हैं।

परमात्मप्रभु शिव

वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थितं रोदसी
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयः शब्दो यथार्थाक्षरः।
अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते
स स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायास्तु वः।।

वेदान्तग्रन्थों में जिन्हें एकमात्र परम पुरुष परमात्मा कहा गया है, जिन्होंने समस्त द्यावा-पृथिवी को अन्तर्बाह्य-सर्वत्र व्याप्त कर रखा है, जिन एकमात्र महादेव के लिये 'ईश्वर' शब्द अक्षरशः यथार्थरूप में प्रयुक्त होता है और जो दूसरे के विशेषण का विषय नहीं बनता, अपने अन्तर्हृदय में समस्त प्राणों को निरुद्धकर मोक्ष की इच्छावाले योगीजन जिनका निरन्तर चिन्तन और अन्वेषण करते रहते हैं, वे नित्य एक समान सुस्थिर रहनेवाले, महाप्रलय में भी विक्रिया को नहीं प्राप्त होनेवाले और भक्तियोग से शीघ्र प्रसन्न होनेवाले भगवान् शिव आप सभी का परम कल्याण करें।

मंगलस्वरूप भगवान् शिव

कृपाललितवीक्षणं स्मितमनोज्ञवक्त्राम्बुजं
शशाङ्ककलयोज्ज्वलं शमितघोरतापत्रयम्।
करोतु किमपि स्फुरत्परमसौख्यसच्चिद्वपु-

र्धराधरसुताभुजोद्वलयितं महो मङ्गलम्।।

जिसकी कृपापूर्ण चितवन बड़ी ही सुन्दर है, जिसका मुखारविन्द मन्द मुसकान की छटा से अत्यन्त मनोहर दिखायी देता है, जो चन्द्रमा की कला से परम उज्ज्वल है, जो आध्यात्मिक आदि तीनों तापों को शान्त कर देने में समर्थ है, जिसका स्वरूप सच्चिन्मय एवं परमानन्दरूप से प्रकाशित होता है तथा जो गिरिराजनन्दिनी पार्वती के भुजपाश से आवेष्टित है, वह शिवनामक कोई अनिर्वचनीय तेजःपुञ्ज सबका मंगल करे।

भगवान् अर्धनारीश्वर

नीलप्रवालरुचिरं विलसत्त्रिनेत्रं
पाशरुणोत्पलकपालत्रिशूलहस्तम्।
अर्धाम्बिकेशमनिशं प्रविभक्तभूषं
बालेन्दुबद्धमुकुटं प्रणमामि रूपम्।। (शारदातिलकतन्त्रम् 19/58)

श्रीशंकरजी का शरीर नीलमणि और प्रवाल के समान सुन्दर(नीललोहित) है, तीन नेत्र हैं, चारों हाथों में पाश, लाल कमल, कपाल और शूल हैं, आधे अंग में अम्बिकाजी और आधे में महादेवजी हैं। दोनों अलग-अलग शृङ्गारों से सज्जित हैं, ललाट पर अर्धचन्द्र है और मस्तक पर मुकुट सुशोभित है, ऐसे स्वरूप को नमस्कार है।

यो धत्ते निजमाययैव भुवनाकारं विकारोज्झितो
यस्याहुः करुणाकटाक्षविभवौ स्वर्गापवर्गाभिधौ।
प्रत्यग्बोधसुखाद्वयं हृदि सदा पश्यन्ति यं योगिन-
स्तस्मै शैलसुताश्लितार्धवपुषे शश्वन्नमस्तेजसे।।

जो निर्विकार होते हुए भी अपनी माया से ही विराट् विश्व का आकार धारण कर लेते हैं, स्वर्ग और अपवर्ग(मोक्ष) जिनके कृपाकटाक्ष के ही वैभव बताये जाते हैं तथा योगीजन जिन्हें सदा अपने हृदय के भीतर अद्वितीय आत्मज्ञानानन्द-स्वरूप में ही देखते हैं, उन तेजोमय भगवान् शंकर को, जिनका आधा शरीर शैलराजकुमारी पार्वती से सुशोभित है, निरन्तर मेरा नमस्कार है।

भगवान् शंकर

वन्दे वन्दनतुष्टमानसमतिप्रेमप्रियं प्रेमदं
पूर्णं पूर्णकरं प्रपूर्णनिखिलैश्वर्यैकवासं शिवम्।
सत्यं सत्यमयं त्रिसत्यविभवं सत्यप्रियं सत्यदं
विष्णुब्रह्मनुतं स्वकीयकृपयोपात्ताकृतिं शंकरम्।।

वन्दना करने से जिनका मन प्रसन्न हो जाता है, जिन्हें प्रेम अत्यन्त प्यारा है, जो प्रेम प्रदान करनेवाले, पूर्णानन्दमय, भक्तों की अभिलाषा पूर्ण करनेवाले, सम्पूर्ण ऐश्वर्यों के एकमात्र आवास-

स्थान और कल्याणस्वरूप हैं, सत्य जिनका श्रीविग्रह है, जो सत्यमय हैं, जिनका ऐश्वर्य त्रिकालाबाधित है, जो सत्यप्रिय एवं सत्य-प्रदाता हैं, ब्रह्मा और विष्णु जिनकी स्तुति करते हैं, स्वेच्छानुसार शरीर धारण करनेवाले उन भगवान् शंकर की मैं वन्दना करता हूँ।

गौरीपति भगवान् शिव

विश्वोद्भवस्थितिलयादिष हेतुमेकं
गौरीपतिं विदिततत्त्वमनन्तकीर्तिम्।
मायाश्रयं विगतमायमचिन्त्यरूपं
बोधस्वरूपममलं हि शिवं नमामि।।

जो विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और लय आदि के एकमात्र कारण हैं, गौरी गिरिजाकुमारी उमा के पति हैं, तत्त्वज्ञ हैं, जिनकी कीर्ति का कहीं अन्त नहीं है, जो माया के आश्रय होकर भी उससे अत्यन्त दूर हैं तथा जिनका स्वरूप अचिन्त्य है, उन विमल बोधस्वरूप भगवान् शिव को मैं प्रणाम करता हूँ।

महामहेश्वर

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं* निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

चाँदी के पर्वत के समान जिनकी श्वेत कान्ति है, जो सुन्दर चन्द्रमा को आभूषणरूप से धारण करते हैं, रत्नमय अलंकारों से जिनका शरीर उज्ज्वल है, जिनके हाथों में परशु तथा मृग, वर और अभय मुद्राएँ हैं, जो प्रसन्न हैं, पद्मके आसन पर विराजमान हैं, देवतागण जिनके चारों ओर खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघ की खाल पहनते हैं, जो विश्व के आदि, जगत् की उत्पत्ति के बीज और समस्त भयों को हरनेवाले हैं, जिनके पाँच मुख और तीन नेत्र हैं, उन महेश्वर का प्रतिदिन ध्यान करें।

पञ्चमुख सदाशिव

मुक्तापीतपयोदमौक्तिकजवावर्णैर्मुखैः पञ्चभिः
त्र्यक्षैरञ्चितमीशमिन्दुमुकुटं पूर्णेन्दुकोटिप्रभम्।
शूलं टङ्ककृपाणवज्रदहनान् नागेन्द्रघण्टाङ्कुशान्
पाशं भीतिहरं दधानममिताकल्पोज्ज्वलं चिन्तयेत्।। (शारदाति. 18/85)

---

* शारदातिलकतन्त्रम् (18/13) में 'विश्वबीजं' की जगह 'विश्वरूपं' पाठ आता है।

जिन भगवान् शंकर के पाँच मुखों में क्रमशः ऊर्ध्वमुख गजमुक्ता के समान हलके लाल रंग का, पूर्व मुख पीतवर्ण का, दक्षिण मुख सजल मेघ के समान नील वर्ण का, पश्चिम मुख मुक्ता के समान कुछ भूरे रंग का और उत्तर मुख जवापुष्प के समान प्रगाढ़ रक्त वर्ण का है, जिनकी तीन आँखें हैं और सभी मुख-मण्डलों में नील वर्ण के मुकुट के साथ चन्द्रमा सुशोभित हो रहे हैं, जिनके मुखमण्डल की आभा करोड़ों पूर्ण चन्द्रमा के तुल्य आह्लादित करनेवाली है, जो अपने हाथों में क्रमशः त्रिशूल, टङ्क(परशु), तलवार, वज्र, अग्नि, नागराज, घण्टा, अङ्कुश, पाश तथा अभयमुद्रा धारण किये हुए हैं एवं जो अनन्त कल्पवृक्ष के समान कल्याणकारी हैं, उन सर्वेश्वर भगवान् शंकर का ध्यान करना चाहिये।

अम्बिकेश्वर

आद्यन्तमङ्गलमजातसमानभावमार्यं तमीशमजरामरमात्मदेवम्।
पञ्चाननं प्रबलपञ्चविनोदशीलं सम्भावये मनसि शंकरमम्बिकेशम्।।

जो आदि और अन्त में(तथा मध्य में भी) नित्य मङ्गलमय हैं, जिनकी समानता अथवा तुलना कहीं भी नहीं है, जो आत्मा के स्वरूप को प्रकाशित करनेवाले देवता(परमात्मा) हैं, जिनके पाँच मुख हैं और जो खेल-ही-खेल में -अनायास जगत् की रचना, पालन और संहार तथा अनुग्रह एवं तिरोभावरूप पाँच प्रबल कर्म करते रहते हैं, उन सर्वश्रेष्ठ अजर-अमर ईश्वर अम्बिकापति भगवान् शंकर का मैं मन-ही-मन चिन्तन करता हूँ।

पार्वतीनाथ भगवान् पञ्चानन

शूलाही टङ्कघण्टासिशृणिकुलिशपाशाग्न्यभीतीर्दधानं
दोर्भिः शीतांशुखण्डप्रतिघटितजटाभारमौलिं त्रिनेत्रम्।
नानाकल्पाभिरामापघनमभिमतार्थप्रदं सुप्रसन्नं
पद्मस्थं पञ्चवक्त्रं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि।।

जो अपने करकमलों में क्रमशः त्रिशूल, सर्प, टङ्क(परशु), घण्टा, तलवार, अंकुश, वज्र, पाश, अग्नि तथा अभयमुद्रा धारण किये हुए हैं, जिनका प्रत्येक मुखमण्डल द्वितीया के चन्द्रमा से युक्त जटाओं से सुशोभित हो रहा है, जिनके चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि-ये तीन नेत्र हैं, जो अनेक कल्पवृक्षों के समान अपने भक्तों को स्थिर रहनेवाले मनोरथों से परिपूर्ण कर देते हैं और जो सदा अत्यन्त प्रसन्न ही रहते हैं, जो कमल के ऊपर विराजित हैं, जिनके पाँच मुख हैं तथा जिनका वर्ण स्फटिक के समान दिव्य प्रभा से आभासित हो रहा है, उन पार्वतीनाथ भगवान् शंकर को मैं नमस्कार करता हूँ।

भगवान् महाकाल

स्रष्टारोऽपि प्रजानां प्रबलभवभयाद् यं नमस्यन्ति देवा
यश्चित्ते सम्प्रविष्टोऽप्यवहितमनसां ध्यानमुक्तात्मनां च।

लोकानामादिदेवः स जयतु भगवाञ्छ्रीमहाकालनामा
बिभ्राणः सोमलेखामहिवलययुतं व्यक्तलिङ्गं कपालम्।।

प्रजा की सृष्टि करनेवाले प्रजापति देव भी प्रबल संसारभय से मुक्त होने के लिये जिन्हें नमस्कार करते हैं, जो सावधान-चित्तवाले ध्यानपरायण महात्माओं के हृदयमन्दिर में सुखपूर्वक विराजमान होते हैं और चन्द्रमा की कला, सर्पों के कङ्कण तथा व्यक्त चिन्हवाले कपाल को धारण करते हैं, सम्पूर्ण लोकों के आदिदेव उन भगवान् महाकाल की जय हो।

श्रीनीलकण्ठ

बालार्कायुततेजसं धृतजटाजूटेन्दुखण्डोज्ज्वलं
नागेन्द्रैः कृतभूषणं जपवटीं शूलं कपालं करैः।
खट्वाङ्गं दधतं त्रिनेत्रविलसत्पञ्चाननं सुन्दरं
व्याघ्रत्वक्परिधानमब्जनिलयं श्रीनीलकण्ठं भजे।।

(शारदातिलकतन्त्र 19/48)

भगवान् श्रीनीलकण्ठ दस हजार बालसूर्यों के समान तेजस्वी हैं, सिर पर जटाजूट, ललाट पर अर्धचन्द्र और मस्तक पर साँपों का मुकुट धारण किये हैं, चारों हाथों में जपमाला, शूल, नरकपाल और खट्वाङ्ग-मुद्रा है। तीन नेत्र हैं, पाँच मुख हैं, अति सुन्दर विग्रह है, बाघम्बर पहने हुए हैं और सुन्दर पद्म पर विराजित हैं। इन श्रीनीलकण्ठदेव का भजन करना चाहिये।

पशुपति

मध्याह्नार्कसमप्रभं शशिधरं भीमाट्टहासोज्ज्वलं
त्र्यक्षं पन्नगभूषणं शिखिशिखाश्मश्रुस्फुरन्मूर्धजम्।
हस्ताब्जैस्त्रिशिखं समुद्गरमसिं शक्तिं दधानं विभुं
दंष्ट्राभीमचतुर्मुखं पशुपतिं दिव्यास्त्ररूपं स्मरेत्।।

(शारदातिलकतन्त्र 20/27)

जिनकी प्रभा मध्याह्नकालीन सूर्य के समान दिव्य रूप में भासित हो रही है, जिनके मस्तक पर चन्द्रमा विराजित है, जिनका मुखमण्डल प्रचण्ड अट्टहास से उद्भासित हो रहा है, सर्प ही जिनके आभूषण हैं तथा चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि -ये तीन जिनके तीन नेत्रों के रूप में अवस्थित हैं, जिनकी दाढ़ी और सिर की जटाएँ चित्र-विचित्र रंग के मोरपंख के समान स्फुरित हो रही हैं, जिन्होंने अपने करकमलों में त्रिशूल, मुद्गर, तलवार तथा शक्ति को धारण कर रखा है और जिनके चार मुख तथा भयावह दाढ़ें हैं, ऐसे सर्वसमर्थ, दिव्य रूप एवं अस्त्रों को धारण करनेवाले पशुपतिनाथ का ध्यान करना चाहिये।

भगवान् दक्षिणामूर्ति

मुद्रां भद्रार्थदात्रीं सपरशुहरिणां बाहुभिर्बाहुमेकं
जान्वासक्तं दधानो भुजगवरसमाबद्धकक्षो वटाधः।
आसीनश्चन्द्रखण्डप्रतिघटितजटः क्षीरगौरस्त्रिनेत्रो
दद्यादाद्यैः शुकाद्यैर्मुनिभिरभिवृतो भावशुद्धिं भवो वः।।

जो भगवान् दक्षिणामूर्ति अपने कर कमलों में अर्थ प्रदान करनेवाली भद्रामुद्रा, मृगीमुद्रा और परशु धारण किये हुए हैं और एक हाथ घुटने पर टेके हुए हैं, कटिप्रदेश में नागराज वासुकि को लपेटे हुए हैं तथा वटवृक्ष के नीचे अवस्थित हैं, जिनके प्रत्येक सिर के ऊपर जटाओं में द्वितीया का चन्द्रमा जटित है और वर्ण धवल दुग्ध के समान उज्ज्वल वर्ण का है, सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि–ये तीनों जिनके तीन नेत्र के रूप में स्थित हैं, जो सनकादि एवं शुकदेव(नारद) आदि मुनियों से आवृत हैं, वे भगवान् भव–शंकर आप के हृदय में विशुद्ध भावना(विरक्ति) प्रदान करें ।

महामृत्युञ्जय

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्।
अङ्कन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकान्तं शिवं
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।।

त्र्यम्बकदेव अष्टभुज हैं। उनके एक हाथ में अक्षमाला और दूसरे में मृगमुद्रा है, दो हाथों से दो कलशों में अमृतरस लेकर उससे अपने मस्तक को आप्लावित कर रहे हैं और दो हाथों से उन्हीं कलशों को थामे हुए हैं। शेष दो हाथ उन्होंने अपने अङ्क पर रख छोड़े हैं और उनमें दो अमृतपूर्ण घट हैं। वे श्वेत पद्म पर विराजमान हैं, मुकुट पर बालचन्द्र सुशोभित है, मुखमण्डल पर तीन नेत्र शोभायमान हैं। ऐसे देवाधिदेव कैलासपति श्रीशंकर की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ।
अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थचन्द्रस्रव–
त्पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युञ्जयम्।।

(शिवपुराण रु. सं. सतीखण्ड अ. 38)

जो अपने दो कर कमलों में रखे हुए दो कलशों से जल निकाल कर उनसे ऊपरवाले दो हाथों द्वारा अपने मस्तक को सींचते हैं। अन्य दो हाथों में दो घड़े लिये उन्हें अपनी गोद में रखे हुए हैं तथा शेष दो हाथों में रुद्राक्ष एवं मृगमुद्रा धारण करते हैं, कमल के आसन पर बैठे हैं, सिर पर स्थित चन्द्रमा से निरन्तर झरते हुए अमृत से जिनका सारा शरीर भींगा हुआ है तथा जो तीन नेत्र

धारण करनेवाले हैं, उन भगवान् मृत्युञ्जय का, जिनके साथ गिरिराजनन्दिनी उमा भी विराजमान हैं, मैं भजन (चिन्तन) करता हूँ।

सदाशिव के अनेक रूप हो सकते हैं। तंत्र ग्रन्थों में उनके विभिन्न रूपों के भिन्न-भिन्न ध्यानसंबंधी मन्त्र दिये गये हैं। यहाँ पर "शारदातिलकतन्त्र" (18 वां, 19 वां और 20 वां पटल) में वर्णित कुछ अन्य प्रधान रूपों के ध्यान-मंत्र दिये जा रहे हैं।

वामदेव का रूप –

"कुङ्कुमाभं चतुर्वक्त्रं वामदेवं त्रिलोचनं ।
वराभयाक्षवलयकुठारन्दधतं करैः ।।
विलासिनं स्मेरवक्त्रं सौम्ये सौम्यक् समर्चयेत् ।" (18/92-93)

सद्योजात का रूप –

"कर्पूरेन्दुनिभं सौम्यं सद्योजातं त्रिलोचनं ।।
हरिणाक्षगुणाभीतिवरहस्तं चतुर्मुखं ।
बालेन्दुशेखरोल्लासिमुकुटं पश्चिमे यजेत् ।।" (18/93-94)

हरपार्वती का रूप –

"वन्दे सिन्दूरवर्णं मणिमुकुटलसच्चारुचन्द्रावतंसं
भालोद्यन्नेत्रमीशं स्मितमुखकमलं दिव्यभूषाङ्गरागं।
वायोरुन्यस्तपाणेररुणकुवलयं सन्दधत्याः प्रियाया
वृत्तोत्तुङ्गस्तनाग्रे निहितकरतलं वेदटङ्केष्टहस्तं ।।" (18/100)

मृत्युञ्जय का रूप –

"चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितं
मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभं ।
कोटीरेन्दुगलत्सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं
कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत् ।।" (18/108)

महेश का रूप –

"कैलासाद्रिनिभं शशाङ्कशकलस्फूर्जज्जटामण्डितं
नासालोकनतत्परं त्रिनयनं वीरासनाध्यासितम् ।

मुद्राटङ्ककुरङ्गजानुविलसत्पाणिं प्रसन्नाननंकक्षावद्धभुजङ्गमं
मुनिवृतं वन्दे महेशं परं ।।" (19/19)

दक्षिणामूर्त्ति का दूसरा रूप–

"स्फटिकरजतवर्ण मौक्तिकीमक्षमाला–
ममृतकलशविद्याज्ञानमुद्राः करागैः ।
दधतमुरगकक्षं चन्द्रचूडं त्रिनेत्रं
विधृतविविधभूषं दक्षिणामूर्त्तिमीडे ।।" (19/31)

अर्द्धनारीश्वर का दूसरा रूप –

"रक्ताभमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्रं
खट्वाङ्गपाशसृणिशुभ्रकपालहस्तं।
वेदाननं चिपिटनासमनर्घभूषं
रक्ताङ्गरागकुसुमांशुकमीशमीडे ।।" (19/90)

पञ्चानन का रूप–

"घण्टाकपालसृणिमुण्डकृपाणखेट–
खट्वाङ्गशूलडमरूनभयन्दधानं ।
रक्ताङ्गमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्रं
पञ्चाननाब्जमरुणांशुकमीशमीडे ।।" (19/120)

अघोरका दूसरा रूप –

"सजलघनसमाभं भीमदंष्ट्रं त्रिनेत्रं
भुजगधरमघोरं रक्तवस्त्राङ्गरागं ।
परशुडमरुखड्गान् खटेकं बाणचापौ
त्रिशिखनरकपाले बिभ्रतं भावयामि ।।" (20/10)

नीलग्रीव का रूप –

"उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलन्दधानं करैः ।
नीलग्रीवमुदारभूषणशतं शीतांशुचूडोज्ज्वलं
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये ।।
ध्यायेन्नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं

दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथ सृणिं खड्गपाशाभयानि ।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमद्रंष्ट्रं
सर्पाकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम् ।।"

(20/52-53)

चण्डेश्वर का रूप–

"चण्डेश्वरं रक्ततनुं त्रिनेत्रं रक्तांशुकाढ्यं हृदि भावयामि ।
टङ्कं त्रिशूलं स्फटिकाक्षमालां कमण्डलुं बिभ्रतमिन्दुचूडम् ।।"

(20/139)

(उपर्युक्त लेख गीताप्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण के 'शिवोपासनांक' एवं 'शारदातिलकतंत्र' जो आर्थर एवलान द्वारा संपादित एवं मोतीलाल बनारसीदास द्वारा दिल्ली से 1982 में प्रकाशित है, पर आधारित है।)

❀❀❀❀❀❀

सद्गुणों का महत्त्व

यैस्त्यक्तो ममताभावो लोभमोहौ निराकृतौ।
ते यान्ति परमं स्थानं कामक्रोधविवर्जिताः।।
यावत् कामश्च लोभश्च रागद्वेषव्यवस्थितिः।
नाप्नुवन्ति परां सिद्धिं शब्दमात्रैकबोधकाः।।

(संक्षिप्त स्कन्दपुराणांक, गीताप्रेस, माहेश्वरखण्ड-केदारखण्ड 31/63-64 पृ. 66 से उद्धृत)

जिन्होंने ममत्व को त्याग दिया है और लोभ तथा मोह को दूर कर दिया है, वे काम-क्रोध से हीन मानव परम पद को प्राप्त होते हैं। जबतक मन में काम, लोभ, राग और द्वेष डेरा डाले रहते हैं, तबतक केवल शब्दमात्र का बोध रखनेवाले विद्वान् परम सिद्धि (मुक्ति) को नहीं प्राप्त होते हैं।